Mr. Speaker: It might be put down on the agenda, and we shall see how the business proceeds.

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : अभी आधे घंटे का समय और बढ़ा कर इस बिल को पास किया जा सकता है ।

17.33½ hrs.

GENERAL BUDGET (KERALA) GENERAL DISCUSSION; DEMANDS FOR GRANTS ON ACCOUNT (KERALA); SUPPLEMENTARY DEMANDS FOR GRANTS (KERALA)—*contd.*

Mr. Speaker: The House will take up the general discussion on the Budget (Kerala) for 1965-66, and also further discussion and voting on the Demands for Grants on Account in respect of the Budget (Kerala) for 1965-66 and also further discussion and voting on the Supplementary Demands for Grants in respect of the Budget (Kerala) for 1964-65.

श्री बड़े (खारगौन) : अध्यक्ष महोदय, केरल का बजट अपने सामने अभी आया है और केरल की सप्लीमेंटरी ग्राण्ट्स भी आई हैं । वस्तुत: यह बजट और यह ग्राण्ट्स वहां एलेक्शन होने के बाद केरल की असेम्बली में ही आनी चाहियें थीं लेकिन आज दुर्भाग्य की बात है कि इस डिमाक्रेसी में, इस प्रजातन्त्र देश में आज इसे पालियामेंट के सामने लाकर उससे सहमति ली जाती है । इस लिये कि केरल में तीन तीन एलेक्शन होने के बाद भी वहां लेजिस्लेटिव असेम्बली की स्थापना नहीं हो सकी है और उसके सामने यह डिमाण्ड न आकर के पालियामेंट के सामने आ रही हैं ।

17.35 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

केरल में जो एलेक्शन हुए उनके अनसार वहां पर लेफ्टिस्ट कम्युनिस्ट्स और राइटिस्ट कम्युनिस्ट्स दोनों मिला कर उन के पक्ष 43 सदस्य आये हैं, और उनमें से 28 जेल में हैं । चाहिये तो यह था कि उन सब को बुलाना था और बुलाने के बाद यदि लेजिस्लेटिव असेम्बली नहीं चलती तो प्रेजिडेंट का प्रोक्लेमेशन होना चाहिये था । लेकिन ऐसा न करके शायद यह सोच कर कि जो कम्युनिस्ट्स जेल में हैं उनको छोड़ना पड़ेगा, और छोड़ने के बाद शायद कांग्रेस का राज्य वहां न चले, पता नहीं किस बुद्धि का निर्माण कांग्रेस के मन में या प्रशासन के मन में हुआ कि कल एक दम से प्रोक्लेमेशन आ गया, और वहां आर्टिकल 356 के अन्तर्गत वहां पर प्रेजिडेंट्स रूल हो गया । आज इस प्रकार से वहां पर प्रजातन्त्र की हत्या हो रही है । मैं तो समझता हूं कि यह प्रजातन्त्र की हत्या ही नहीं है, बल्कि आज तो वहां कम्युनिस्ट पार्टी अधिक संख्या में आई है, कल स्वतन्त्र पार्टी आ सकती है या जनसंघ आ सकता है, इसलिये कांग्रेस चाहती है कि वहां केवल कांग्रेसी ही राज करें । वह किसी दूसरी पार्टी को वहां पर राज नहीं करने देना चाहती। तीन तीन एलेक्शन करने के बाद आज केरल में यह परिस्थिति उत्पन्न हो गई है, और इसे कांग्रेस ने उत्पन्न किया है । तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना । कांग्रेस पार्टी ही मुस्लिम लीग को विजयी करके उनसे मिल गई थी । अभी भी मैं ऐसा समझता हूं कि केरल कांग्रेस, असन्तुष्ट कांग्रेस और कांग्रेस पार्टी अगर मिल जातीं तो शायद वहां पर लेजिस्लेटिव असेम्बली हो जाती । लेकिन कामराज साहब को यह अच्छा नहीं लगा, इसलिये वहां ऐसा नहीं किया गया ।

दूसरी बात यह है कि वस्तुत: नन्दा जी ने इतने लेट उन कम्युनिस्टों को अरेस्ट किया कि उन्होंने अपने ही भाग्य पर पत्थर मार लिया । कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों को पहले ही अरेस्ट कर लेते या उसको इल्लीगल ठहरा देते तो जो बातें हो गई हैं, वह शायद न होतीं । लेकिन आज जिस तरह से काम किया जा रहा है उससे सम्पूर्ण देश में ही नहीं, आस पास के सभी देशों में, सारे जगत में हिन्दुस्तान की हंसी हो रही है कि कम्युनिस्ट पार्टी को

[श्री बड़े]

इल्लीगल न ठहरते हुए वहां एलेक्शन करने के पहले उनको अरेस्ट कर लिया । एलेक्शन करने के बाद कांग्रेस ने यह नहीं देखा कि वहां कम्युनिस्ट पार्टी का या कांग्रेस पार्टी का राज्य हो सकता है या नहीं, लेजिस्लेटिव असेम्बली चल सकती है या नहीं । इस की तरफ न देखते हुए एक दम से वहां पर कल प्रेजिडेंट का प्रोक्लेमेशन आ गया ।

अगर वास्तव में देखा जाय तो कम्युनिस्ट पार्टी का जोर केरल में कम हो गया है । जब सन् 1957 में जब वहां एलेक्शन हुए थे तो उसमें उन को 39.14 परसेन्ट वोट मिले थे और अब की कम्युनिस्ट पार्टी को 27.5 प्रतिशत वोट मिले हैं । कांग्रेस को 33 प्रतिशत से कुछ ज्यादा वोट मिले हैं । अगर परसेन्टेज निकाला जाये तो कांग्रेस को ज्यादा वोट मिले हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को कम मिले हैं । यदि कम्युनिस्ट पार्टी को लाकर लेजिस्लेटिव असेम्बली चलाई जाती तो 27.5 प्रतिशत के साथ ही वह चलती । इसलिये मैं समझता हूं कि प्रेजिडेंट साहब ने जो प्रोक्लेमेशन दिया है वह बिल्कुल नाजायज है और इस को मैं प्रजातन्त्र की हत्या समझता हूं ।

जब यहां पर केरल का बजट पेश हुआ था और सप्लीमेंटरी ग्रान्ट्स पेश हुई थीं उसी समय मेरे मन में शक हो गया था कि शायद कांग्रेस की इच्छा प्रोक्लेमेशन करा कर प्रेजिडेंट्स रूल वहां कायम करने की है । कहा जाता है कि एशिया में सब से ज्यादा डिमाक्रेटिक देश हिन्दुस्तान है । अगर यहां पर डिमाक्रेसी को किसी ने काले रंग से पोता है तो वह कांग्रेस ने किया है । उसी ने डामर का काला ब्रुश यहां की डिमाक्रेसी पर लगाया है । उसके अन्दर हिम्मत होनी चाहिये थी कि अपने कार्य से केरल में जो पार्टियां हैं उन्हें सामने लाकर उन के विरुद्ध प्रचार करके, भले ही कम्युनिस्ट पार्टी की लेजिस्लेटिव असेम्बली वहां होती, जनता के सामने यह बात उपस्थित करती कि वह लोग अच्छे नहीं हैं ।

कल कांग्रेस की एक बहुत बड़ी सदस्या, श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने कहा था कि कांग्रेस गवर्नमेंट में बड़ा इंडीसीजन है । जम्मू और काश्मीर से ले कर केरल तक गवर्नमेंट का इंडिसीजन चलता है । वह कहती हैं कि लेफ्टिस्ट कम्यूनिस्ट अच्छे नहीं हैं, कहती है कि वह पार्टी बहुत खराब है, देश-द्रोही पार्टी है, वह चाइना को लाना चाहती है । मैं पूछना चाहता हूं कि आप इस प्रकार का डिसीजन क्यों नहीं लेते हैं । उन को अरेस्ट कर के रखती हैं लेकिन इस पार्टी को इल्लीगल करार क्यों नहीं देतीं । फिर यह कहती हैं कि चाइना हमारा शत्रु है । तब चाइना का दूतावास हमारे यहां क्यों रक्खा जा रहा है । इस से जनता के मन में यह आता है कि कांग्रेस न जाने कैसे राज्य कर रही है । एक तरफ कहते हैं कि कम्यूनिस्ट खराब हैं, चाइना दुश्मन है, । मैं कहता हूं कि जिस वक्त चाइना ने एग्रिमेंट किया था . . .

डा० मा० श्री० अणे (नागपुर) : आप क्या समझते हैं ।

श्री बड़े : मैं बतला रहा हूं । अगर आप के मन में इस प्रकार की बात है तो आप को कम्यूनिस्ट पार्टी को बन्द करना चाहिए, उस को नाजायज ठहराना चाहिए । मैं यह समझता हूं कि जिस वक्त चाइना ने हमारे ऊपर आक्रमण किया था उसी वक्त हमको चाइना के दूतावास से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए था और साथ साथ लेफ्टिस्ट कम्युनिस्टों को नाजायज करार दे देना था । लेकिन ऐसा नहीं किया और उसी गलती का फल उनको केरल में मिला है । अब वह कहते हैं कि प्रोक्लेमेशन करेंगे । इस से लोगों का प्रजातंत्र से विश्वास उठता है और वह समझते हैं कि यदि किसी जगह कांग्रेस की सरकार नहीं आवेगी तो कांग्रेस किसी जिगजेग रास्ते से अपने को कायम रखेगी ।

[श्री बड़े]

इसी सम्बन्ध में मैं एक बात कहना चाहता हूं । एक बार ब्रह्मदेव पृथ्वी पर यह देखने आया कि कामकाज कैसा चल रहा है । तो वह आ कर अपनी कुर्सी पर बैठ गया । उसको सोशलिस्ट पार्टी का नेता मिलने गया तो वह बाहर आ कर उससे मिला; कम्युनिस्ट पार्टि का नेता उससे मिलने गया तो वह उससे बाहर आ कर मिला; जन संघ का नेता उससे मिलने गया तो वह उससे बाहर आकर मिला; स्वतंत्र पार्टी का नेता आया तो उससे वह बाहर आकर मिला। लेकिन जब कांग्रेस का नेता आया तो वह अपनी कुर्सी पर से नहीं उठा । जब पूछा गया कि कांग्रेस के नेता के लिए वह अपनी कुरसी से उठ कर उससे मिलने क्यों नहीं आया, तो उसने कहा कि कांग्रेस वाले कुरसी से चिपके रहना चाहते हैं । मैं इस लिए नहीं उठा कि कहीं ये मेरी कुरसी पर न बैठ जाएं। ऐसा ही केरल में किया गया है। जब चुनाव में नहीं जीते तो प्रोक्लेमेशन कर दिया। अब जो हो गया है उसको तो भुगतना ही होगा । डिमांड्स के बारे में मुझे कुछ कहना नहीं है, इनको तो मंजूर करना चाहिए, लेकिन जो इस तरह पार्लियामेंट में ये सप्लीमेंटरी डिमांडस रख कर पार्लियामेंट का समय लिया जा रहा है इससे दुख होता है । इलेक्शन करने के बाद तो कांग्रेस को डिमाक्रेटिक प्रिंसिपल के अनुसार कार्य करना चाहिए था ।

इन शब्दों के साथ मैं इन डिमांड्स को सपोर्ट करता हूं ।

Mr. Deputy-Speaker: Shri Kappen.

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : इस समय हाउस में कोरम नहीं है, इस वास्ते हाउस को स्थगित किया जाए ।

Shri Rane (Buldana): There was an understanding in the Business Advisory Committee that between 5 and 6 P.M. quorum would not be raised. If they insist on it, that time would have to be deducted from the time provided.

Mr. Deputy-Speaker: This time would be deducted.

श्री हुकम चन्द कछवाय : कोरम नहीं होगा तो हाउस स्थगित हो जाएगा ।

श्री बड़े : यह तै हुआ था कि कोई पार्टी यह सवाल नहीं उठाएगी, लेकिन अगर कोई इस सवाल को उठाता है तो हमारी जवाबदारी नहीं है ।

Mr. Deputy-Speaker: You agree to certain things, and then you raise this point.

Shri Bade: If any Member raises it, we cannot do anything.

Shri Khadilkar (Khed): You cannot control your party members?

Shri Kappen (Muvattupuzha): I am in duty bound to support these Demands, but I do so with reluctance. According to me, it is not better than a shopkeeper's account.

श्री हुकम चन्द कछवाय : पांच मिनट के बाद कोरम नहीं होगा तो हाउस स्थगित हो जाएगा ।

Mr. Deputy-Speaker: This time will be deducted from the total time.

Shri Vasudevan Nair (Ambalpuzha): How can we suffer?

Mr. Deputy-Speaker: What am I to do?

Shri Khadilkar: When the leaders agree, is it not the duty of the leaders to impose some discipline?

Shri Vasudevan Nair: How can the other party suffer on account of one party?

श्री हुकम चन्द कछवाय : यहां कोरम रखना सरकार का काम है ।

Mr. Deputy-Speaker: The quorum bell is being rung. The leaders of the party must control their Members.

Shri Vasudevan Nair: I request you not to deduct the time or to reduce the time. The Kerala budget is being discussed. Only four hours have been set apart.

Mr. Deputy-Speaker: It is not the Kerala Members who will suffer; it is the Jan Sangh Members who will suffer.

Shri Khadilkar: They have already spoken. That is the trouble.

श्री हुकम चन्द कछवाय : कोरम चैलेंज किए पाच मिनट से ज्यादा हो गया है। इस लिए कल के लिए कार्रवाई स्थगित की जाए।

Mr. Deputy-Speaker: There is no quorum. The House stands adjourned.

17.47 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Friday, March 26, 1965/Chaitra 5, 1887 (Saka).

GMGIPND—LS II—2584(Ai) LSD—24-4-65—970.